Daily Current Affairs

विलासितापूर्ण उपभोग का हमारे पर्यावरणीय पदचिह्न पर पड़ता प्रभाव

परिचय

- वर्तमान में जलवायु परिवर्तन ने एक वैश्विक चिंता का रूप ले लिया है। लेकिन कई अध्यन रिपोर्ट से यह सामने आया है कि हमारे विलासितापूर्ण उपभोग और जीवन शैली में अभी भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। जो जलवायु परिवर्तन कारकों को बढ़ावा देता है।
- हाल ही में 'भारत में जल, वायु प्रदूषण और विशिष्ट/लक्जरी खपत के कार्बन पदचिह्न' शीर्षक से एक अध्ययन रिपोर्ट आई है जिसमें हमारे विलासितापूर्ण उपभोग और उसका पर्यावरण पर प्रभाव बताया गया है।
- उल्लेखनीय है कि पर्यावरणीय पदचिह्न इस बात का माप है कि हमारे व्यक्तिगत कार्यकलाप पृथ्वी पर कितना प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए कार चलाने का पर्यावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, वाहन के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले संसाधनों से लेकर, हम कैसे और कितना चलाते हैं, वाहन के अंतिम निपटान तक।
- जब हम एक स्थान विशेष या क्षेत्र पर पर्यावरणीय पदचिह्नों का आकलन करते है तो इसे स्थानीय पर्यावरणीय पदचिह्नों का विश्लेषण कहा जाता है।
- उदाहरण के लिए कुछ स्थानीय मुद्दे जैसे पानी की कमी और वायु प्रदूषण आदि अक्सर स्थानीय या क्षेत्रीय होते हैं।
- ऐसा इसलिए क्योंकि एक क्षेत्र में अत्यधिक पानी का उपयोग सीधे तौर पर अन्यत्र पानी की कमी को प्रभावित नहीं कर सकता है। यही कारण है कि स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है; और यहीं पर घरेलू पर्यावरणीय पदचिह्नों को वर्तमान में समझने का महत्व नजर आता है।

Result Mitra

फोटो साभार: गेटी इमेजेज़

हालिया रिपोर्ट के प्रमुख बिंदु

- 'भारत में जल, वायु प्रदूषण और विशिष्ट लक्जरी खपत के कार्बन पदचिह्न' शीर्षक से जारी रिपोर्ट में ऐसे समृद्ध व्यक्तियों के पर्यावरणीय प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है, जो बुनियादी जरूरतों से ज्यादा उपभोग में संलग्न हैं।
- इस रिपोर्ट में भारत में विभिन्न आर्थिक वर्गों के घरों में विलासिता उपभोग विकल्पों से जुड़े CO2, पानी और पार्टिकुलेट मैटर (PM2.5) पदचिहनों की जांच की गई है।
- इस रिपोर्ट में विलासिता उपभोग पदचिह्नों की तुलना गैर-विलासिता उपभोग से जुड़े लोगों से भी की गई है।
- रिपोर्ट के तहत जिन विलासिता उपभोग की वस्तुओं या किर्याकलापों को शामिल किया गया है उसमें विभिन्न श्रेणियां शामिल हैं जैसे बाहर भोजन करना, छुट्टियां, फर्नीचर, सामाजिक कार्यक्रम आदि।
- विलासिता उपभोग का पर्यावरणीय प्रभाव
- इस अध्ययन रिपोर्ट में विलासिता उपभोग के पर्यावरणीय प्रभाव को जानने के लिए घरेलू उपभोग के विभिन्न घटकों में उनके उत्पादन में शामिल संसाधनों या सामग्रियों के साथ पूरी अर्थव्यवस्था के इनपुट/आउटपुट विश्लेषण को नियोजित किया गया है।
- विश्लेषण के इस दृष्टिकोण से उत्पादन के प्रत्येक चरण से जुड़े पर्यावरणीय प्रभावों को जानने में मदद मिली है।
- उदाहरण के लिए, जल पदचिह्न का उपयोग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के विभिन्न चरणों के साथ-साथ घर द्वारा प्रत्यक्ष जल उपयोग के दौरान पानी के उपयोग को मापने के लिए किया गया।

- PM2.5 पदचिह्न में एम्बेडेड उत्सर्जन और घरेलू गतिविधियों जैसे ईंधन लकड़ी, मिट्टी के तेल और वाहन ईंधन के उपयोग से प्रत्यक्ष उत्सर्जन दोनों शामिल हैं।
- इसी तरह, CO2 पदचिह्न का उपयोग घरेलू खपत से जुड़े एम्बेडेड और प्रत्यक्ष CO2 उत्सर्जन दोनों को जानने के लिए किया गया है।

रिपोर्ट से प्रमुख निष्कर्ष

- अध्ययन रिपोर्ट से पता चलता है कि जैसे-जैसे परिवार गरीब से अमीर या आर्थिक रूप से सशक्त की ओर बढ़ते हैं, ऊपर तीन दिए पर्यावरणीय पदचिह्न में उनकी भूमिका बढ़ती हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार सबसे अमीर 10% परिवारों के पदचिहन पूरी आबादी के कुल औसत से लगभग दोगुने हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार विलासिता उपभोग से वायु प्रदूषण पदचिहन में सर्वाधिक 68% की उच्चतम वृद्धि देखी गई है।
- इसके विपरीत, जल पदचिह्न में वृद्धि सबसे कम 39% है, जबकि CO2 उत्सर्जन 55% है।

- इस आधार पर निष्कर्ष निकालता है कि भारतीय उपभोक्ता, विशेष रूप से शीर्ष 10% ही सर्वाधिक पर्यावरणीय पदचिह्नों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।
- अतः रिपोर्ट के आधार पर शीर्ष 10% अमीरों को बढ़े हुए पदचिह्नों को मुख्य रूप से विलासिता उपभोग की वस्तुओं पर बढ़ते व्यय के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

पर्यावरणीय पदचिह्नों को बढ़ाने में सर्वाधिक योगदान

- रिपोर्ट के अनुसार पर्यावरणीय फुटप्रिंट में वृद्धि के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार कारक में बाहर खाने/रेस्तरां को एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में पहचाना गया है।
- इसके अतिरिक्त, फलों और मेवों की खपत को जल पदचिह्न में वृद्धि के कारक के रूप में पहचाना गया है।
- रिपोर्ट के अनुसार व्यक्तिगत वस्तुएं जैसे कार आभूषण और बाहर खाने-पीने जैसी विलासितापूर्ण उपभोग की वस्तुएं CO2 और वायु प्रदूषण के पदचिह्नों में वृद्धि में योगदान करती हैं।
- गरीब परिवार विशेष रूप से घरेलू जलाऊ लकड़ी का प्रयोग कर पर्यावरणीय फुटप्रिंट में भूमिका निभाता है। इन जीवनशैली विकल्पों के कारण PM2.5 फुटप्रिंट में वृद्धि होती है।

Result Mitra

अन्य प्रमुख तथ्य

- भारत में शीर्ष 10% अमीरों द्वारा औसत प्रति व्यक्ति CO2 फुटप्रिंट, 6.7 टन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है, जो 2010 के वैश्विक औसत 4.7 टन से अधिक है।
- इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन पर पेरिस सम्मलेन (2015) में निर्धारित लक्ष्य 1.9 टन CO2eq/cap के वार्षिक औसत से भी यह अधिक है।

प्रमुख निष्कर्ष

- रिपोर्ट में यह अपेक्षा की गई है कि व्यापक सामाजिक प्रभाव वाली उपभोग वस्तुओं पर अमीर वर्ग की जीवन शैली के प्रभाव को देखते हुए, नीति निर्माताओं को स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप समृद्ध परिवारों के उपभोग स्तर को नीचे की ओर लाने के प्रयासों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- ऐसा इसलिए क्योंकि वर्तमान में स्थिरता के प्रयास केवल वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन वैश्विक पर्यावरणीय पदचिह्न स्थानीय और क्षेत्रीय पैमाने के पदचिह्नों के साथ संरेखित नहीं होते हैं। अतः वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर कार्यवाही के बाद भी ये स्थानीय कारक इन प्रयासों को कम कर रहे है।
- इसके अतिरिक्त ये स्थानीय उपभोग विलासिता की खपत से बढ़े हुए स्थानीय और क्षेत्रीय पर्यावरणीय मुद्दे हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं।
- उदाहरण के लिए, पानी की कमी और वायु प्रदूषण हाशिए पर रहने वाले समूहों पर असमान रूप से प्रभाव डालते हैं, उन्हें और अधिक हाशिए पर धकेल देते हैं, जबकि संपन्न वर्ग वातानुकूलित कारों और वायु शोधक जैसे सुरक्षात्मक उपायों का खर्च उठा सकते हैं।
- यह पर्यावरणीय न्याय संबंधी चिंताओं को दूर करने और समान स्थिरता प्रयासों को सुनिश्चित करने में बहु-फुटप्रिंट विश्लेषण के महत्व को रेखांकित करता है।

Result Mitra